

प्रमुख उद्योग

अध्याय-19

(1) लोहा इस्पात उद्योग

राज्य में लोहा इस्पात से कई प्रकार की वस्तुओं का निर्माण हो रहा है। इससे लोहे को पिघलाकर लहाई की जाती है। लोहे की तारें खींची जाती हैं। तारों से कीलें बनाई जाती हैं। इसी प्रकार स्टील से कृषि उपकरण तैयार किए जाते हैं। इनमें नाहन का ढलाई कारखाना व नूरपुर (जाछ) का कृषि उपकरण कारखाना प्रमुख है।

(i) नाहन ढलाई कारखाना, नाहन : यह हिमाचल का सबसे पुराना कारखाना है। इसका निर्माण सन् 1875 में सिरमौर के तत्कालीन राजा ने करवाया था। उस समय यहां वजन तोड़ने के बाट ढाले जाते थे। कुछ समय बाद गन्ने का रस निकालने वाले कोल्हू तैयार किये जाने लगे।

हिमाचल प्रदेश के गठन के समय 15 अप्रैल, 1948 को भारत सरकार इस कारखाने में बराबर की हिस्सेदारी बन गई। सन् 1952 में भारत सरकार ने इसे अपने अधिकार में ले लिया। 1964 में इसका प्रशासनिक स्वचालन व 1971 में इसका स्वामित्व भी हिमाचल प्रदेश सरकार को सौंप दिया।

इस कारखाने की अधिकृत पूंजी 3 करोड़ रुपये है। इसमें आजकल बैलों व बिजली से चलायेजाने वाले गन्ने के बेलनों के अतिरिक्त कृषि, विद्युत् मोटरें, मोनोब्लाक पम्पिंग सैट, मेनहोल कवर, सी. आई. पाइपें, जी.आई. ड्रम, व्हील वैरोज व हार्डिटे पोस्टस इत्यादि बनाए जाते हैं। इसमें 700 श्रमिक कार्य कर रहे हैं।

उत्पादन व मूल्य

ढलाई कारखाने का उत्पादन व मूल्य निम्न तालिका में दिखाया गया है :

वर्ष	1975-76	1980-81	1985-86	1986-87	1988
उत्पादन टनों में	1665	1210	1277	1166	बन्द हो गई समापन कार्य चल
मूल्य (लाख रुपये में)	65	84	109	137	रहा है तथा यह अब कार्यशाला (वर्कशाप) बन गई है।

स्रोत-नाहन फाउंड्री, नाहन

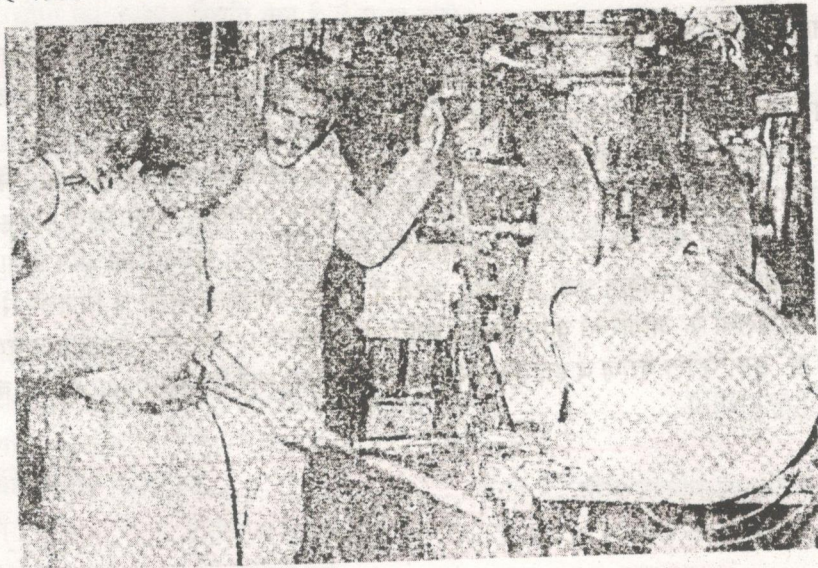
यह कारखाना लगातार घाटे में जा रहा है क्योंकि इसकी मशीनें बहुत पुरानी हो गई हैं। इस कारखाने में ऐसी वस्तुओं का उत्पादन होता है जिसकी राज्य में कोई मांग नहीं। कच्चा माल भी बाहर से मंगाना पड़ता है। यहां बनने वाले बिजली के मोटर व पम्पों की मांग कम हो गई है साथ ही निजी क्षेत्र की छोटी इकाइयों में कड़ी प्रतियोगिता है। इन सबसे ऊपर काम चलाऊ पूंजी का भी अभाव है।

यद्यपि इस कारखाने के लिए लगभग 4 करोड़ रुपए की काम चलाऊ पूंजी की आवश्यकता है फिर भी हिमाचल सरकार की वित्तीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए सिर्फ एक करोड़ रुपए का ही प्रावधान सातवीं योजना में किया गया है। इसके साथ ही इसके उत्पादन में विविधता लाई जा रही है तथा विद्युत मोटर बनने वाली उप-इकाई नवीनीकरण व विस्तार किया गया है। अक्तूबर 1988 से यह बन्द कर दी

गई। अब यह समापनकार्य में लगी है। अब यह लोक निर्माण व सिंचाई जन स्वास्थ्य की कार्यशाला बन गई है।

(i) **ऋषभ इस्पात** : यह कारखाना सोलन जिले में नालागढ़ में स्थित है। यहां इस्पात के टोके तैयार किए जाते हैं। अगस्त 1976 से इस इकाई ने उत्पादन शुरू कर दिया है। कंपनी सुचारु रूप से कार्य कर रही है। यह इकाई हिमाचल प्रदेश खनिज व उद्योग विकास निगम के सहयोग से स्थापित की गई है।

(ii) **कृषि उपकरण जाछ (नूरपुर)** : नूरपुर के समीप जाछ में कृषि उपकरण बनाने का एक मध्यम आकार का कारखाना हिमाचल प्रदेश कृषि-उद्योग निगम ने स्थापित किया है। कारखाना सुचारु रूप से चल रहा है। इसमें गेंती, बेलचा, खलिनू हल जैसे कृषि के काम आने वाले उपकरण इस्पात से तैयार किए जाते हैं। यह 1983 से काम कर रहा है। 1990-91 में 17 लाख के कृषि उपकरण बेचे।



इकाई कारखाने का एक दृश्य

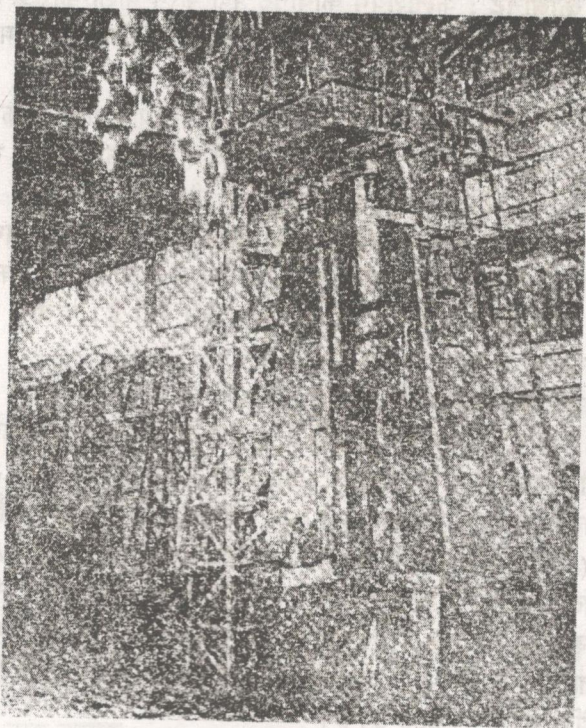
इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश खनिज एवं औद्योगिक विकास निगम सिलेंडर स्टील ट्यूब, ओटो ब्रेक्स, कास्टिंग, फोजिंग व टूल बनाने वाली बहुत-सी निजी क्षेत्र के कारखानों को आर्थिक मदद कर रहा है।

(2) कागज उद्योग

यह उद्योग सोलन जिले के बरोटीवाला, नालागढ़ तथा सिरमौर जिले में काला अम्ब में स्थापित है। प्रायः सभी इकाइयां निजी क्षेत्र में हैं। इन्हें हि० प्र० खनिज व औद्योगिक विकास निगम से आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। इन इकाइयों में क्राफ्ट पेपर व गत्ता तथा टिशु पेपर तैयार किया जा रहा है।

बरोटीवाला केन्द्र : बरोटीवाला (सोलन) में तीन इकाइयां क्राफ्ट पेपर तैयार कर रही हैं—सरोओ पेपर्स, शैल पेपर्स व देसराज पेपर्स। तीनों इकाइयों को हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम ने सामान्य पूंजी के रूप में सहायता राशि प्रदान की है।

नालागढ़ : नालागढ़ (सोलन) में दो इकाइयां कागज बना रही हैं। इनके नाम बरोटीवाला पेपर्स व टिशु एण्ड फाइबरस नालागढ़ है। पहली इकाई क्राफ्ट पेपर व दूसरी इकाई ओवरी पेपर बना रही है। दोनों ने उत्पादन शुरू कर दिया है। इन्हें भी एम.आई.डी.सी. से सामान्य पूंजी के रूप में आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है।



Agricultural Implements Factory, Jachh

काला अम्ब : काला अम्ब (सिरमौर) में दो इकाइयां क्राफ्ट पेपर बना रही हैं सबसे बड़ी इकाई ओगली पेपर्स है। इसकी क्षमता 7 मी० टन प्रतिदिन है। कबर पेपर्स, दूसरी इकाई है। हिमाचल प्रदेश एम०आई०डी०सी० इन्हें साम्य पूंजी के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है।

(3) रसायनिक उद्योग

रसायनिक उद्योग में प्रमुख उर्वरक है। इसके साथ ही कीटनाशक दवाइयां व कैल्शियम कार्बोनेट तथा अन्य दवाइयां तैयार की जाती हैं।

(i) हिमाचल उर्वरक मंडोली (नालागढ़) : यह हिमाचल प्रदेश सामान्य उद्योग निगम की सहायक कम्पनी है। इसका पंजीकरण 1972 में किया गया था। कम्पनीकी 1991 में अधिकृत पूंजी 4 करोड़ रुपये थी। 1976 से यह कारखाना उत्पादन कर रहा है। इसकी वार्षिक क्षमता 50 हजार मी० टन है। इसमें विभिन्न ग्रेडों की एन.पी. के उर्वरक का उत्पादन किया जाता है। राज्य की अन्तरिक मांग 8,000 से 10,000 मी० टन है। अतः अतिरिक्त उत्पाद को पड़ोसी राज्यों में बेचने का प्रबन्ध किया गया है। कम्पनी अपना माल हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश व राजस्थान में बेच सकती है। माल बेचने की अनुमति हर वर्ष लेनी पड़ती है। कम्पनी चाहती है कि उसे दीर्घकाल के लिए पड़ोसी राज्यों में अपना माल बेचने की अनुमति मिल जाये ताकि यह पूरी क्षमता से उत्पादन कर सके। साथ ही हिमाचल की आवश्यकता पूरी करने के बाद शेष पैदावार को पड़ोसी राज्यों में बेच सके। ऐसी व्यवस्था के अभाव में कई बार इसका उत्पादन पूरी तरह बिक नहीं पाता और कारखाने को हानि उठानी पड़ती है। उत्पादन लगभग 12 हजार टन प्रति वर्ष चल रहा है। इसमें लगभग 500 लोगों को रोजगार मिला है। 1984-85 से यह आयोडीनयुक्त नमक तैयार कर रहा है। 1991 में 2500 मी० टन नमक तैयार हुआ।

(ii) कैल्शियम कार्बोनेट : कैल्शियम कार्बोनेट पैदा करने वाला कारखाना निजी क्षेत्र का है। यह मंडा साहिब में स्थित है। हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम ने साम्य अंश खरीदकर आर्थिक मदद की है।

(iii) कीटनाशक दवाइयाँ : कीटनाशक दवाइयों में मैलाथियान नामक एक आधारभूत रसायन तैयार किया जा रहा है। यह कार्य हिमाचल पैस्टीसाईड एण्ड कैमीकल कम्पनी कर रही है। यह बरोटी वाला में स्थित है। इस संयंत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 1000 मी० टन प्रतिवर्ष है।

(iv) जोगेन्द्रनगर तथा माजरा में आयुर्वेदिक दवाइयाँ : जोगेन्द्रनगर तथा माजरा में आयुर्वेदिक दवाइयाँ बनाई जाती हैं तथा नूरपुर के समीप राजा का बाग में निजी क्षेत्र में एक इकाई पैनिंसिया नाम से ऐलोपैथी के काम आने वाले आधारभूत रसायन तैयार कर रही है। परवाणु में पोलीथीन के विभिन्न उपयोगों पर कई इकाइयों में काम हो रहा है।

(4) तारपीन का तेल व विरोजा उद्योग

हिमाचल प्रदेश में वनों पर आधारित उद्योगों में तारपीन का तेल व विरोजा उद्योग प्रमुख हैं। यह उद्योग सार्वजनिक व निजी दोनों क्षेत्रों में चल रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र में वन निगम के अधीन नाहन व बिलासपुर के कारखाने हैं। निजी क्षेत्र में भी पांच इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। इनके नाम ये हैं। (i) मै. टरपीन इन्डस्ट्रीज मेहतपुर (ऊना), (ii) हिमाचल टरपीन प्रोडक्ट्स, काला अम्ब (सिरमौर), (iii) आर. एण्ड टी. फेक्ट्री, पलियारा, (iv) नवल स्टार कार्पोरेशन, ऊना तथा (v) शिवालिक रेजिन मिल, गगरेट हैं।

मै० टरपीन इन्डस्ट्रीज मेहतपुर व मै० हिमाचल टरपीन प्रोडक्ट काला अम्ब बिलासपुर व नाहन के कारखाने में बने तारपीन के तेल को पूर्व निर्धारित कीमतों पर खरीद लेती है। बिलासपुर व नाहन के कारखानों की वार्षिक क्षमता 11,000 टन है।

विरोजा, तारपीन का तेल, फिनाइल व बार्निश का उत्पादन इन कारखानों में होता है। विरोजा, कागज, रंग व साबुन बनाने के काम आता है। वे सभी उत्पाद चील के वृक्षों से निकाले गये गंदा विरोजा से किए जाते हैं। गन्दा विरोजा के उत्पादन के कार्य का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है और यह कार्य वन-निगम कर रहा है। वर्षों से च्यावित वनों को विश्राम देने की नीति के कारण पत्तियों की संख्या घटाई जा रही है। इनकी संख्या 35 लाख से घटाकर 25 लाख कर दी गई। फलस्वरूप गन्दे विरोजे का उत्पादन भी लगभग 8 हजार टन से घटकर 5 हजार टन कर दिया गया।

निर्यात :—निगम ने विभिन्न विकसित एवं विकासशील देशों तथा पूर्वी जर्मनी, अमेरिका, इटली, कोनिया, इंग्लैण्ड, सिंगापुर, ताईवान, आस्ट्रेलिया तथा पाकिस्तान को रेजिन का निर्यात किया। देश की मण्डियों में विरोजा का अधिक्य घटाने तथा देश विदेश में विरोजा की मण्डियाँ स्थिर रूप से बनाये रखने के उद्देश्य से रोमानिया को भी निर्यात किया।

उत्पादन :—वर्ष 1991-92 से 9000 टन विरोजे का शोधन लगभग 7000 टन पक्के विरोजे का उत्पादन तथा 18 लाख लीटर तारपीन के तेल का उत्पादन हुआ।

(5) सीमेंट उद्योग

कच्चा माल :—सीमेंट एक मूल उद्योग है। इसके लिए चूने का पत्थर, जिप्सम व खड़िया मिट्टी कच्चे माल के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। हिमाचल में चूना बिलासपुर, चम्बा, कांगड़ा, कुल्लू, सोलन, सिरमौर, व मण्डी जिलों में पाया जाता है। जिप्सम चम्बा, किन्नौर, लाहौल-स्पिति व सिरमौर में पाया जाता है।

इकाइयाँ :—राज्य में दो कारखाने उत्पादन कर रहे हैं। पहला कारखाना सिरमौर जिले में राजवन में स्थित है। दूसरा कारखाना बिलासपुर जिले में गगल में स्थित है।

राजवन कारखाना :- यह कारखाना 8 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया है दैनिक उत्पादन क्षमता 600 टन है। यह इकाई भारतीय सीमेंट निगम ने स्थापित की है। विस्तार के बाद उत्पादन की क्षमता 1000 टन हो जायेगी।

गगल कारखाना :- यह निजी क्षेत्र का कारखाना है। 1984 में उत्पादन कार्य शुरू हो गया है। दैनिक क्षमता 1800 टन है।

चम्बा, मण्डी व सोलन जिले में नई इकाइयां स्थापित होने वाली हैं। मण्डी जिले में सुन्दरनगर के समीप रोपा किरण में एक इकाई शीघ्र स्थापित होगी। यहां 10 करोड़ टन सीमेंट ग्रेड का पत्थर मिला है। सोलन जिले में अर्कीदाड़लाघाट क्षेत्र में भी चूने के बहुत भण्डार हैं। यहां शीघ्र ही सीमेंट की इकाई स्थापित हो जायेगी।

(6) शराब उद्योग

हिमाचल में अंग्रेजी शराब (बीयर, व्हिस्की, माल्ट) बनाने का काम बहुत पुराना है। यह उद्योग निजी क्षेत्र में है। तीन इकाइयां कार्यरत हैं।

(i) सोलन ब्रयूरी (ii) कसोली डिस्टिलरी (iii) रंगड़ ब्रयूरी मेहतपुर

इनके उत्पादन में काम आने वाला कच्चा माल राज्य में मिल जाता है। हाप्स का पहले आयात किया जाता था। अब लाहौर स्पिति में इसका उत्पादन हो रहा है। आलू से शराब बनाने का प्रयास किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश खनिज उद्योग विकास निगम बोदका व वरान्डी तैयार करने की परियोजना पर विचार कर रही है। मेहतपुर में 1979 से माल्ट निस्सारण का काम शुरू हो गया है। वर्ष 1989 में 94 लाख लीटर बीयर व 12.7 लाख लीटर माल्ट का निस्सारण हुआ। मेहतपुर इकाई में 1983 के बाद उत्पादन नहीं हुआ।

(7) कल-पुर्जे व इलेक्ट्रॉनिक यन्त्र उद्योग

राज्य में सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में विविध किस्म के कल पुर्जे व यन्त्र तैयार किए जाते हैं। ये सभी शोधी, चम्बाघाट, धर्मपुर, परवाणु, नालागढ़ क्षेत्र में केन्द्रित हैं। कुछ इकाइयां सिरमौर जिले के पांवटा व गिरिनगर में भी स्थापित हैं। धर्मपुर में घड़ियां बनाई जाती हैं। परवाणु में घड़ियों के केस, डायल, व ज्वेल बनाने की इकाइयां हैं। थर्मामीटर, सूक्ष्म यन्त्र व वैज्ञानिक यन्त्र सोलन में तैयार किए जा रहे हैं। सोलन में कन्डक्टर (विद्युत) भी बनाये जा रहे हैं। चीर-फाड़ सम्बन्धी यन्त्र पांवटा साहब में तथा इंजीनियरी यन्त्र गिरिनगर में बनाए जा रहे हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स कार्पोरेशन :- 1984-85 में शिमला में इलेक्ट्रॉनिक्स निगम की स्थापना की। शिमला जिले में शोधी व सोलन जिले में चम्बाघाट में इलेक्ट्रॉनिक्स काम्पलेक्स स्थापित किए हैं। इनमें टी० वी०, खिलौने, वृस्टर, एन्टीना, ट्रांसफार्मर व इलेक्ट्रॉनिक्स के विभिन्न हिस्से पुर्जे तैयार किए जाते हैं। ई.सी.टी.वी. भी बनाया जाता है। निगम ने संयुक्त क्षेत्र में 5 इकाइयां लगाई हैं जो 16 करोड़ रुपए की लागत से बनी हैं। ये संचार उपकरण तैयार कर रही हैं। निजी क्षेत्र में भी कई इकाइयों को सहायता देकर चालू किया गया है। इनमें टी.वी. ट्यूब, मैग्नेटिक टेप व वीडियो टेप, फोन आदि बनाने का काम शुरू किया है।

(2) कताई बुनाई उद्योग

ऊन में ऊन, रेशम की कताई-बुनाई का काम संगठित क्षेत्र तथा कुटीर उद्योग के क्षेत्र में होता है।

(अ) ऊनी वस्त्र उद्योग :- ऊन के विधायन एवं कातने की दो इकाइयां 1974 से सोलन जिले के नालागढ़ में स्थापित हैं। दोनों ही हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम की सहायक इकाइयां हैं। प्रत्येक की अधिकृत पूंजी 2 करोड़ रुपये है। यह सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां हैं। इसमें 2800 ऊन कातने के तकुए हैं। चार ऊन साफ करने की मशीनें हैं। 1976 से वाणिज्य स्तर पर उत्पादन शुरू हो गया

है। फैक्टरी में ऊनी गलीचों के लिए धागा तैयार किया जाता था। 1983 से इकाइयां बन्द हैं। राज्य में गलीचे बनाने का कुटीर उद्योग है। नूरपुर की गलीचा बनाने की इकाई बन्द कर दी गई है।



Carpet Weaving

(ब) बर्सटिड मिल :—यह इकाई 1974 में पंजीकृत की गई। यह नालागढ़ में स्थित है। यह इकाई भी सार्वजनिक क्षेत्र की है। 2.34 करोड़ रुपये की लागत से यह कारखाना खोला गया। यहां 2400 बर्सटिड कातने के त्कुए हैं। 1979 से वाणिज्य उत्पादन शुरू हो गया था। विभिन्न नम्बरों का 450 कि०ग्रा० धागा प्रतिदिन तैयार करने की क्षमता है। इसमें 127 कर्मचारी कार्य कर रहे हैं। 1991 से यह मिल घाटे के कारण बन्द कर दी गई है।

(स) रेशम की कताई व बुनाई :—राज्य में कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। शहतूत के पत्तों पर गांवों में रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। इन्हें औद्योगिक प्रतिष्ठान खरीद लेते हैं। संगठित क्षेत्र में रेशम की कताई का काम कांगड़ा व नूरपुर में तथा बुनाई का काम नूरपुर में होता है। 1991-92 में लगभग 8.5 लाख रुपए मूल्य का धागा व कपड़ा यहां प्रतिवर्ष तैयार हुआ। कपड़ेकी छपाई अमृतसर व बनारस में होती है। कपड़े से साड़ियां बनाई जाती हैं।

(द) शाल बुनना :—सारे राज्य में शाल व पट्टू बुनने का काम होता है। हर गांव या शहर में खड्डियां हैं। प्रायः घर के व्यक्ति काम करते हैं। कई बार किराये पर भी मजदूर रखे जाते हैं। कुल्लू की ऊनी शालें बहुत मशहूर हैं। इसी तरह नूरपुर में पशमीना केन्द्र है। यहां पशमीना की बहुत मुलायम व कीमती शालें व चादरें तैयार की जाती हैं। उनकी शालें तो चम्बा, धर्मशाला, नगरोटा, कुल्लू, मण्डी, सोलन आदि सभी जगहों में बनाई जाती हैं। कोट बनाने की पट्टियां चम्बा व किन्नौर में विशेष रूप से बनाई जाती हैं।

किन्नौर की पट्टियां बहुत अच्छी होती हैं। रामपुर में लवी के मेले में, कुल्लू में दशहरे के मेले पर तथा कांगड़ा में नवरात्रों के अवसर पर इनका काफी व्यापार होता है। 1988 में दो लाख शालें बुनी गईं।

(य) खादी की कताई बुनाई : हिमाचल प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड तथा राज्य हस्तशिल्प व हथकरघा निगम गांवों में कारीगरों को खादी बुनने का काम सौंपती है एवं अपनी खुदरा बिक्री केन्द्रों से इनकी बिक्री का प्रबन्ध करती हैं। खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए कीमत में छूट दी जाती है पोलिस्टर खादी का उत्पादन व प्रयोग देश भर में हो रहा है परन्तु हिमाचल में अभी यह कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ।

आगामी दस वर्षों में राज्य औद्योगिक क्षेत्र में तेज़ गति से आगे बढ़ पाएगा।

अभ्यास-प्रश्न

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- नाहन ढलाई कारखाने पर सविस्तार नोट लिखो।
- कागज़ का उद्योग वरोटीवाला, नालागढ़ क्षेत्र में केन्द्रित है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? अपने पक्ष में तर्क दीजिए।
- तारपीन का तेल व विरोज़ा उद्योग का वर्णन करो।
- कताई बुनाई उद्योग पर एक लेख लिखो।

(ब) लघु उत्तर-प्रश्न

- उर्वरक उद्योग का वर्णन करो।
- शराब उद्योग का वर्णन करो।
- सीमेंट के कारखाने कहां हैं ? लिखो।
- वैज्ञानिक यन्त्र कहां बनाये जाते हैं ? लिखो।
- ऋषभ इस्पात व कृषि उपकरण जाछ का वर्णन करो।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो।

- हिमाचल का सबसे पुराना कारखाना है।
- बिलासपुर व नाहन में में कारखाने हैं।
- कैल्शियम कार्बोनेट का उत्पादन में होता है।
- रेशम की बुनाई में होती है।
- कुल्लू के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ।

- गलीचों के लिए ऊन कातने का कारखाना अब बन्द पड़ा है।
- बर्सटिड धागा कातने के लिए आस्ट्रेलिया से ऊन आयात की जाती है।
- ओगली पेपर्स इकाई नालागढ़ में स्थित है।
- रासायनिक उर्वरक का उत्पादन आवश्यकता से कम है।
- हम तारपीन के तेल का आयात करते हैं।

